Vol 3 Issue 6 Dec 2013 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

Golden Research Thoughts
Volume-3, Issue-6, Dec-2013
ISSN 2231-5063

Available online at www.lbp.world

सल्तनत कालीन भारत में कोतवालपदका स्वरूप एवं महत्व :– एक ऐतिहासिक मूल्यांकन

डॉ. ज्ञानेश्वर शामराव कडव
इतिहास विभाग प्रमुख , ज. मु. पटेल कला वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, भंडारा.

सारांश: मध्यकालीन भारत मे नगर एवं पुलिस विभाग का प्रमुख कोतवाल नाम से परिचित था। कोतवाल शब्द की उत्पत्ती के बारे में हरिशंकर श्रीवास्तव लिखते है ''प्राचीन भारत में ''कोटपाल'' नामक दुर्ग का अधिकारी था। इसी से कोतवाल शब्द की उत्पत्ती हुई है। यह शब्द भारतीय है। कालांतर में राजधानी, प्रांतीय राजधानियों तथा बडे नगरों का प्रमुख अधिकारी कोतवाल कहा जाने लगा। यह पद उत्तर तथा दक्षिण दोनों में प्रचलित था।''[1]

प्रस्तावना :

विकिपिडीया वेबसाईटपर लिखा है "Kotwal was a title used in Medival India for the leader of a Kot or fort. Kotwal often controlled the fort of a major town or an area of smaller towns on behalf on another ruler. It was Similar in function to British India Zaildar from Mughal times the title was given to the local ruler of a large town and the surrounding area. However, the title is also used for leaders in small villages as well. Kotwal has also been translated as chief Police Officer.[2]

मोरलँड के अनुसार 'कोतवाल' गोलकुंडा नगर का प्रमुख प्रशासनीक अधिकारी तथा प्रमुख न्यायाधिश था।[3] दिल्ली सल्तनत काल में नगर का शासन कोतवाल नामक अधिकारी के अधीन था। कुतुबुद्दीन ऐबक ने मीरात (मेरठ) के दुर्गपर कोतवाल नामक अधिकारी की नियुक्ती की थी।[4]

सल्तनत काल में कोतवाल के कार्यो का स्वरूप स्पष्ट करते हुए विद्याधर महाजन लिखते है ''राज्य की सुरक्षा बनाये रखने में सुलतान बहुत चिंतीत रहते थे। पुलीस के दैनिक कर्तव्यों को कोतवाल संपन्न करता था। कोतवाल की टूकडी रात्री के समय नगर में गश्त करती थी और खूले रास्तों पर पहरा देती थी। अपने कर्तव्यों का संपादन करने में कोतवाल जनता का सहयोग प्राप्त करता था। वह प्रत्येक क्षेत्र के निवासीयों का नाम अपने रजिस्टर में रखता था ।उनके कार्यो एवं उनकी जीविका के साधनों से अपने को सूचित रखता था और प्रत्येक नये आनेवाले व जानेवालों की रिपोर्ट रखता था। उसका क्षेत्राधिकारी ग्रामीण क्षेत्रों तक फैला हूआ था। वह ऐसे न्यायाधिश की भाँती भी कार्य करता था जो सजा दे सके''।[5]

बी.एन. लुणीया लिखते है ''शांती, सुरक्षा और व्यवस्था बनाये रखने के लिए पुलीस विभाग था, जिसका प्रमुख कोतवाल होता था। केंद्र राजधानी में भी कोतवाल होता था। यह पद विश्वासपात्र और उत्तरदायी व्यक्ती को दिया जाता था। प्रत्येक नगर में भी कोतवाल होता था। नगर सम्बन्धी प्रत्येक सूचना कोतवाल को प्राप्त होती थी। वह एक रजिस्टर रखता था, जिसमें नगर के समस्त निवासियों के नाम होते थे। नगर की सुरक्षा, शांती, कानून और व्यवस्था का भार कोतवाल पर होता था। उसके सैनिक रात्री में गश्त लगाते थे, जिससे जनता को चोरों का भय नही रहे। मूसलमान और हिन्दू दोनों ही के जान–माल की सुरक्षा की व्यवस्था की जाती थी।[6]

इसप्रकार कोतवाल को विस्तृत जिम्मेदारीयों का निर्वहन करना होता था। स्वाभाविक रूप से इन जिम्मेदारीयों का निर्वहन करने के लिए कोतवाल को व्यापक अधिकार प्राप्त होना अवश्यभावी था। इसी वजह से कोतवाल पद को शासन व्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। शासन व्यवस्था सूचारू ढंग से कार्यान्वीत करने के लिए कोतवाल को उसकी दिई हुई (सोपी) जिम्मेदारीया सफलता से निभाना जरूरी था। उसकी सफलता सूलतान को कार्यक्षम एवं प्रभावी शासक के रूप में मान्यता देने मे सहाय्यक बनती थी। इसकी जानकारी सूलतान पद पर आसीन शासक को होने से हर सूलतान कोतवाल को ऐहमियत देता था, नतिजन कोतवाल का राजनिती में काफी प्रभाव बना रहा। यहाँ तक की राज्य की नितीनिर्धारण करने में तथा सूलतान कौन बनेगा यह तय करने में कोतवाल की भूमीका अहम बनने लगी। निरंकूश तथा बलवान सूलतान को कोतवाल की सलाह, परामर्श नजर अंदाज करना असंभव हो गया। निम्नलिखित उदाहरणों से एवं इतिहासकारोने दिये विवरणों से यह बात उजागर होती है।

प्रतापसिंह कहते है ''दिल्ली का वयोवृध्द कोतवाल मलिक फकरूद्दीन महत्वपूर्ण मसलों पर सूलतान बल्बन को परामर्श देता था''।[7] जियाउद्दीन बर्नि ने लिखा है ''बल्बन के आदेश बडे कठोर थे, इन आदेशों से शम्सी इनामदारों में, जो नगर में बहुत थे, आतंक फैल गया और प्रत्येक मोहल्ले में हाहाकार मच गया। लोग रोते पिटते कोतवाल काजी फकरूद्दीन के पास गये और वृध्द काजी निराश होकर सूलतान के सामने उपस्थित हुआ। उसकी दशा को देखकर सूलतान ने पूछा कि क्या बात है। कोतवाल ने उत्तर दिया ''मैने सूना है की आरिज सब वृध्द पुरूषों को निकाल रहा है और सरकार उन जमिनों को वापस ले रही है, जिनसे उनका निर्वाह होता है। इससे मुझे बडा दुःख और भय हो रहा है। मै वृध्द और निर्बल हूँ। यदि कयामत के दिन वृध्दो को हटा दिया जाएगा और उन्हे स्वर्ग में

कोई स्थान नही मिलेगा तो मेरी क्या दशा होगी''। काजी की वाक्पटूता से सूलतान द्रवित हो गया और उसने माल अधिकारियों को बूलाकर आदेश दिया कि, गाँव इनामदारों के पास ही रहने दिए जाए और उनकी पुष्टी कर दि जाए। जो कुछ आदेश इस विषय में दिए गए है वे रद्द माने जाए''।[8] इसप्रकार कोतवाल के विरोध कि वजह से बल्बन जैसे प्रबल एवं निरंकूश सूलतान को अपना आदेश रद्द करना पडा।

बल्बन ने अपने मृत्यू से पहले शहीद शहजादे (मूहम्मद खाँ) के पुत्र कैखुसरो को उत्तराधिकारी नियुक्त किया था। लेकिन दिल्ली का कोतवाल मलिक फखरूद्दीन के नेतृत्व में अमिरों ने इसका विरोध किया और बगराखाँ के पुत्र कैकुबाद को मुईजुद्दीन की उपाधी से विभूषीत कर सिंहासन पर बैठा दिया।9इसतरह सूलतान पद पर कौन बैठेगा इसका निर्धारण करने में कोतवाल की भूमीका महत्वपूर्ण थी, यह स्पष्ट होता है।

केवल बल्बन के काल तक ही कोतवाल पद का प्रभाव समिती नही रहा। खिलजी वंश के काल में भी बरकरार था। जलाउद्दीन खिलजी ने स्वयं को दिल्ली सूलतान घोषीत किया, लेकिन जब तक दिल्ली के कोतवाल का आश्वासन और आमंत्रण उसे प्राप्त नही हुआ तब तक उसने दिल्ली में प्रवेश नही किया।[10]

जलालुद्दीन खिलजी सूलतान बना। अल्लाउद्दीन बलवान तथा निरंकुश शासक के रूपमें जाना जाता था। लेकिन उसपर उसके राजकाल मे भी कोतवाल का प्रभाव एवं महत्व कम नही हुआ, बल्की और उसमें बढ़ोतरी हूई। अपनी सैनिक तानाशाही की दृढता के लिये उसने पुलीस और गुप्तचर प्रथा को मजबुती से संगठीत किया। कोतवाल पुलीस विभाग का मुख्य अधिकारी था। उसके अधिकार व्यापक थे और वह कानून व शांती का रक्षक था। वह आवश्यकता पडने पर महत्वपूर्ण मामलो में सूलतान को परामर्श देता था। जब सूलतान राजधानी से बाहर जाता था तो रनवास की सुरक्षा का भार कोतवाल को सौपा जाता था।[11]

प्रतापसिंह ने भी लिखा है ''अल्लाउद्दीन के समय तो शासक के इस अंग (पुलीस और गुप्तचर संगठण) को बहुत ही ठोस रूप से संगठित किया। पुलीस विभाग का मुख्य अधिकारी कोतवाल कहलाता था। जिसका पद बहूत उत्तरदायीपूर्ण था। कोतवाल का काम न केवल कानून और शांती की रक्षा करना बल्कि महत्वपूर्ण मामलों में सूलतान को परामर्श देना और राजधानी से सूलतान की अनुपस्थी में शाही हरम की सुरक्षा करना था। जब मंगोल कुतलुंग ख्वाजा दिल्ली पर चढ आया था तो उससे युध्द के लिए जाते समय अल्लाउद्दीनने कोतवाल अल्लाउलमुल्क को हरम का भार सौंपा था।[12]

लेकिन उल्लाउद्दीन के काल में राजधानी एवं हरम की सुरक्षा करने तक ही कोतवाल का कार्य सिमित नही था। अल्लाउद्दीन खिलजी को उचित सलाह देने का तथा व्यावहारीक दृष्टी से उपयुक्त निती अंमल मे लाने के लिए सूलतान को मनाने का काम दिल्ली का कोतवाल अलाउल्लमुल्क ने किया। वह अकेला ऐसा अधिकारी था, जो सूलतान को सलाह देने का तथा उसके योजनाओं का विरोध करने का साहस करता था। अल्लाउद्दीन भी स्वयं अल्लाउलमुल्क कि हर सलाह मानता था। इस विषय में प्रतापसिंह मानते है ''अल्लाउलमुल्क की सलाह का सूलतान अल्लाउद्दीन बहुत आदर करता था''।[13]

बी.एन. लुणीया ने कोतवाल अल्लाउलमुल्क का अल्लाउद्दीन खिलजी पर कितना प्रभाव था इसका विवरण इसप्रकार दिया है'' अल्लाउद्दीन एक नया धर्मप्रवर्तक बनना चाहता था और अपने धर्म का प्रचार दूर–दूर देशों तक करना चाहता था। वह सोचने लगा कि वह पैंगबर मुहम्मद साहाब की भाँती एक नवीन धर्म प्रचलित करे। जब सूलतान ने अपनी योजना के लिये काजी अल्लाउलमुल्क से विचार विमर्श किया, तब काजी ने वास्तविक परिस्थिती पर प्रकाश डालते हूए सूलतान को यह परामर्श दिया और समझाया की धर्म प्रचार का यह कार्य पैगंबरो का है, सूलतानो का नही। तलवार के बल से तथा विस्तृत योजनाओं के सहारे धर्म स्थापना और धर्म प्रचार संभव नही है। बादशाहो का कार्य राज–व्यवस्था तथा शासन प्रबंध की देखरेख करना है। कुछ पैगंबरो ने शासन का कार्य अवश्य किया है परंतु कोई बादशहा नबी (पैगंबर) का स्थान जब से यह सृष्टी है, प्राप्त न कर सका और न भविष्य में प्राप्त कर सकेगा।

इस प्रकार काजीने अल्लाउद्दीन को नया धर्म स्थापीत और प्रचलित करने की योजना त्याग देने का परामर्श दिया और इसे अल्लाउद्दीन ने आदरपूर्वक स्वीकार किया। अल्लाउलमुल्क की बातों और सलाह से सूलतान इतना अधिक प्रभावित हुआ कि, उसने यह दृढ संकल्प कर लिया था की, वह धर्म प्रचार करने से ही दूर नही रहेंगा, अपितू धर्म को राजनिती से पूर्णतया पृथक रखेगा और धर्मनिरपेक्ष राज्य स्थापित करेगा।[14]

सल्तनत काल में कोतवाल पद प्राप्त करने की लालसा कितनी तीव्र थी व इसके लिए इस पद की आकांक्षा रखनेवाले पद नही मिलने से सूलतान के खिलाफ विद्रोह करने में भी नही हिचकिचाते थे, इसके उदाहरण मिलते है। हाजी मौला नामक व्यक्ति दिल्ली के प्रसिध्द कोतवाल फखरूद्दीन का दासीपूत्र था। दिल्ली का कोतवाल अल्लाउलमुल्क के देहावसान के बाद हाजी मौला स्वयं दिल्ली का कोतवाल बनना चाहता था, परंतु सूलतान ने इस पद पर तुरमुजी को प्रतिष्ठित किया था। इससे हाजी मौला अत्यंत असंतुष्ट हो गया और उसने सूलतान अल्लाउद्दीन के खिलाफ विद्रोह कर उसने दिल्ली का कोतवाल तुरमुजी का वध कर दिया।[15]

तुगलक शासन काल में भी कोतवाल पुलिस विभाग का प्रधान अधिकारी बना रहा। सुलतान मुहम्मद तुगलक ने पुलिस तथा जेल विभाग को उन्नत बनाया, जिससे साम्राज्य में शांती व्यवस्था भलीभांती रखी जा सके। इसकी जिम्मेदारी कोतवाल पर ही थी।[16]उसकी साहयता के लिए अन्य कर्मचारी पुलिस विभाग में थे ।

निष्कर्ष :–

इस प्रकार उपरोक्त लिखाण से स्पष्ट होता है की, सल्तनत कालीन भारत में कोतवाल नाम से पहचाने जानेवाला अधिकारी प्रशासकीय एवं न्यायीक प्रणाली में आत्यंतीक महत्वूपर्ण जिम्मेदारीया एवं कर्तव्य का निर्वहन करता था। वह एकमात्र अधिकारी था, जिसपर विभिन्न प्रकार की जिम्मेदारीयाँ सोपी गयी थी। इसमे शांती–व्यवस्था की स्थिती बनाएँ रखना, आंतरिक सूरक्षा का प्रबंध करना, न्यायदान में सहयोग करना, सूलतान और सम्राट को सही निर्णय लेने एवं कार्य करने के लिए उपयुक्त सलाह देना सामील है। इसी वजह से शासन व्यवस्था में कोतवाल पद की महत्वपूर्ण भूमीका बनी रही। सुल्तान और सम्राट पर उसका प्रभाव बना रहा। इसी प्रभाव से बल्बन, अल्लाउद्दीन खिलजी जैसे निरंकूश शासकों को भी कोतवाल का परामर्श नजर अंदाज करना असभ्भव हो गया। अल्लाउद्दीन ने धर्म और राजनिती में भेद करने की निती अपनायी, इसका कारण कोतवाल अल्लाउलमुल्क की उचित सलाह थी।

कोतवाल अल्लाउलमुल्क की समुचित परामर्श, दुरदर्शीता

पूर्ण युक्तीयों, तर्कसंगत बातों ने अल्लाउद्दीन को बहुत अधिक प्रभावीत किया। इसी वजह से अल्लाउद्दीन की निती में व्यावहारिकता आ गयी। इसीलिए वह विशाल साम्राज्य का निर्माण कर सका और लंबे समय तक शासन करता रहा। अंत में यह निष्कर्ष निकलता है की, कोतवाल का पद किसी भी अन्य प्रशासकिय, न्यायीक एवं सैनिकी पद से कम महत्व का नही था। व्यावहारीकता मे यह पद व्यापक जिम्मेदारीया एवं कर्तव्यों से भरा था। इसीलिए कोतवाल के अधिकार भी व्यापक थे। प्रशासकिय एवं न्यायीक सफलता का आधार कोतवाल था। इसलिए सूलतानों पर कोतवाल का प्रत्यक्ष प्रभाव रहा। इस बारें मे बहुत कम लिखा गया। इस शोध निबंध के माध्यम से कोतवाल का वास्तविक स्वरूप एवं भूमिका उजागर करने का प्रयत्न किया है। यही उद्देश है।

संदर्भः–

1)श्रीवास्तव हरिशंकर–मुगल शासन प्रणाली –दि मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण – 1978 पृ. 105
2)https://en.m.wikipedia.org/wiki/kotwal
3)मोरलैण्ड –इंडिया ऍट द डेथ ऑफ अकबर लंन्दन – 1920 पृ. 38
4)श्रीवास्तव हरिशंकर–मुगल प्रशासन प्रणाली – पृ. 105
5)महाजन विद्याधर –मध्यकालीन भारत – एस.चन्द एण्ड कंपनी, नई दिल्ली – 1988, पृ. 312
6)लुणीया बी.एन– पूर्व मध्यकालीन भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास मानकचंद बुक डिपो उज्जैन – इंदौर प्रथम संस्करण, (साल नही) पृ. 869
7)प्रतापसिंह–मध्यकालीन भारत–रिसर्च पब्लीकेशन, जयपूर 1988–पृ.105
8)प्रतापसिंह–मध्यकालीन भारत–रिसर्च पब्लीकेशन, जयपूर 1988–पृ.105
9)प्रतापसिंह–मध्यकालीन भारत–रिसर्च पब्लीकेशन, जयपूर 1988–पृ.105
10)प्रतापसिंह–मध्यकालीन भारत–रिसर्च पब्लीकेशन, जयपूर 1988–पृ.145
11)लुणीया बी.एन. –पूर्वोध्दृत – पृ. 529
12)प्रतापसिंह–पूर्वोध्दृत – पृ. 222
13)प्रतापसिंह–पूर्वोध्दृत – पृ. 222
14)लुणीया बी.एन –पूर्वोध्दृत – पृ. 385, 386
15)लुणीया–पूर्वोध्दृत – पृ. 457
16)लुणीया–पूर्वोध्दृत – पृ. 630

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- ✶ International Scientific Journal Consortium
- ✶ OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org